आर.एस.एस.डी.आई, असम चैप्टर के वार्षिक सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में माननीय राज्यपाल के अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक 16 मार्च 2024, शनिवार	**समय : 4.00 PM**	**स्थान : होटल किरनश्री ग्रांड, बोरझार**

- गौहाटी मेडिकल कॉलेज के कार्डियोथोरेसिक एवं न्यूरोसाइंस सेंटर के निदेशक डॉ. बसंत कुमार बैश्य जी,
- आर.एस.एस.डी.आई., असम चैप्टर के अध्यक्ष डॉ. दिनेश अगरवाला जी,
- सचिव डॉ. संजीव मेधी जी,
- निर्वाचित अध्यक्ष डॉ. संतोष अधिकारी जी,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण,
- सोसाइटी के सम्मानित
- देवियों और सज्जनों,

नमस्कार !

आप सभी का Research society for study of Diabetes in India, Assam Chapter के वार्षिक सम्मेलन में स्वागत एवं अभिनन्दन है।

इस वार्षिक सम्मेलन में आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। यह मेरा सौभाग्य है कि मधुमेह जैसी गंभीर बीमारी पर नवीन शोध एवं इसके रोकथाम और संबंधित अन्य विषयों पर चर्चा के लिए आयोजित इस सम्मेलन का उद्घाटन करने का अवसर प्राप्त हुआ। मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं RSSDI, Assam chapter को हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

साथ ही देश के बड़ी संख्या में अलग-अलग क्षेत्रों से इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए आए पेशेवर चिकित्सकों, विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं एवं प्रतिनिधियों को भी धन्यवाद देता हूं।

मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि RSSDI एशिया का सबसे बड़ा मधुमेह स्वास्थ्य देखभाल से जुड़े पेशेवरों, विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं का संगठन है। इसका उद्देश्य भारत में मधुमेह पर अनुसंधान करना तथा इस बीमारी की रोकथाम के लिए काम करना है। इस दृष्टिकोण से यह संगठन देश भर में अकादमिक गतिविधियों और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए बैठकें, शोध और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है, जो कि सराहनीय है।

देवियो एवं सज्जनो,

भारत में सबसे बड़ी आबादी मधुमेह रोग से पीड़ित है। पिछले चार दशकों में भारत में मधुमेह के प्रसार में तेजी से वृद्धि हुई है। देश में इस समय डायबिटीज़ के मरीज़ों की संख्या चार करोड़ है और स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने आशंका व्यक्त की है कि 2025 तक इसकी संख्या सात करोड़ हो जाएगी।

अचम्भे की बात है कि न सिर्फ अधिक उम्र के लोगों को, बल्कि आज के समय में युवा और बच्चे भी डायबिटीज की चपेट में आ रहे हैं। यह वास्तव में गंभीर चिंता का विषय है।

डायबिटीज एक ऐसा रोग है, जिसका इलाज किसी दवा पर निर्भर नहीं है। यह एक लाइफस्टाइल से जुड़ा हुआ रोग है और आप अपने लाइफस्टाइल को बदलकर ही इस रोग से छुटकारा पा सकते हैं।

जो लोग डायबिटीज जैसे खतरनाक रोग की चपेट में आने के बाद भी गंभीर नहीं होते हैं, यानि कि मीठा खाना नहीं छोड़ते, शराब पीना नहीं छोड़ते, फास्ट फूड का शौक रखते हैं, बढ़ते वजन पर ध्यान नहीं देते, व्यायाम या योग नहीं करते, उन लोगों के लिए जीना बहुत मुश्किल हो जाता है। अगर रोगी अपने रोग को लेकर गंभीर रहे और अपनी जीवनशैली में जरूरी बदलाव करें तो डायबिटीज से छुटकारा पाना संभव है।

इसलिए हमें मधुमेह मुक्त भारत बनाने के लिए अपने जीवनशैली में बदलाव करना होगा। अपने स्वस्थ्य जीवनशैली अपनानी होगी, नियमित रूप से शारीरिक व्यायाम और योग करना होगा। अपने बच्चों को भी अधिक से अधिक शारीरिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। परिवारों को सुनिश्चित करना होगा कि उनके बच्चे खुले मैदान में खेलें।

देवियो और सज्जनो,

किसी भी देश का विकास वहाँ के लोगों के विकास के साथ जुड़ा हुआ होता है। इसके मद्देनज़र यह ज़रूरी हो जाता है कि जीवन के हर पहलू में विज्ञान-तकनीक और शोध कार्य अहम भूमिका निभाएँ। विकास के पथ पर कोई देश तभी आगे बढ़ सकता है, जब उसकी आने वाली पीढ़ी के लिये सूचना और ज्ञान आधारित वातावरण बने और उच्च शिक्षा के स्तर पर शोध तथा अनुसंधान के पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हों।

भारत में अनुसंधान और विकास कार्यों की रफ्तार कई क्षेत्रों में तेज़ी से बढ़ रही है। सरकार के सहयोग और समर्थन के साथ, वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, अंतरिक्ष अनुसंधान, विनिर्माण, जैव-ऊर्जा, जल-तकनीक, और परमाणु ऊर्जा जैसे विभिन्न क्षेत्रों में पर्याप्त निवेश और विकास भी हुआ है।

भारत में शोध कार्य की दिशा में हुई प्रगति को नकारा नहीं जा सकता, लेकिन सच्चाई यह भी है कि ऐसे कई अवरोध हैं जिन्हें पार करना भारतीय अनुसंधान और विकास के लिये बहुत ज़रूरी है।

कुछ चुनिंदा क्षेत्रों में उपलब्धियों को छोड़ दें तो वैश्विक संदर्भ में भारत के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकास तथा अनुसंधान की स्थिति धरातल पर उतनी मज़बूत नहीं, जितनी कि भारत जैसे बड़े देश की होनी चाहिये।

नोबेल पुरस्कार एक विश्व-प्रतिष्ठित विश्वसनीय पैमाना है, जो विज्ञान और शोध के क्षेत्र में हासिल की गई उपलब्धियों के जरिये किसी देश की वैज्ञानिक ताकत को बतलाता है। इस मामले में हमारी उपलब्धि लगभग शून्य है। वर्ष 1930 में सर सी.वी. रमन को मिले नोबेल पुरस्कार के बाद से अब तक कोई भी भारतीय वैज्ञानिक इस उपलब्धि को हासिल नहीं कर पाया।

इसलिए मैं आज इस अवसर पर मौजूद चिकित्सक बिरादरी, अनुसंधानकर्ताओं, विशेषज्ञों से आह्वान करता हूं कि आप सभी अपनी बुद्धिमता, श्रम और एक-दूसरे के परस्पर सहयोग से मुधुमेह के उपचार के लिए उपाए तलाशें और मधुमेह मुक्त भारत बनाने में योगदान दें और विज्ञान एवं अनुसंधान के क्षेत्र में भारत के कद और ऊंचा बढ़ाएं।

मुझे आपकी बुद्धिमता, योग्यता और क्षमता पर पूर्ण विश्वास है कि आप इस असंभव कार्य को संभव बना सकते हैं। आपको अपने इन प्रयासों को आगे भी बनाए रखना होगा, उन्हें और रफ्तार देनी है। और ये आप सभी के सहयोग से और आपके आशीर्वाद से ही संभव होगा।

आशा है कि इस वार्षिक सम्मेलन में भी आप सभी विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं द्वारा सार्थक चर्चा से नए विचार सामने आएंगे, जिसके उपयोग से भविष्य में सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे और खतरनाक रूप से बढ़ रही मधुमेह बीमारी पर काबू पाया जा सके।

अंत में इस सम्मेलन की सफलता के लिए मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद!

जय हिन्द!